

भारत का इतिहास

BY A TEAM OF EXPERTS



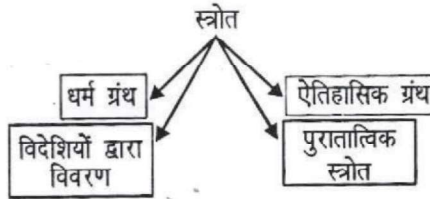
भारत का इतिहास

.....प्राचीन भारत का इतिहास.....

भारत का अतीत एक विशेष महत्व रखता है उसकी आज की स्थिति दर्शाने में, क्योंकि वर्तमान भारत की जड़े भारत के अतीत से जुड़ी हुई हैं। अतीत में हुआ विकास ही क्रमिक रूप से चलता हुआ आज के युग तक आ पहुँचा है। ऐसी स्थिति में अपने अतीत को ठीक से समझना आवश्यक है। इतिहास जानने के लिए स्रोतों की जरूरत पड़ती है जिनके माध्यम से अतीत के बारे में जाना जा सकता है। प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन से हम यह पता लगा सकेंगे कि वर्तमान स्थिति की जड़े कहाँ हैं? इससे हम यह भी जान सकेंगे कि भारतीय समाज एवं संस्कृतियों का विकास कब, कहाँ और कैसे हुआ था?

1.1 प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोतों को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :



धार्मिक ग्रंथ स्रोत

ब्राह्मण साहित्य : ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, महाभारत, रामायण, पुराण।

बौद्ध साहित्य : विनयपिटक, सुत्तपिटक, अभिधम्मपिटक, महावंश, दीपवंश, ललित विस्तार, दिव्यावदान, बुद्धचरित (अश्वघोष) महाविभाष (वसुमित्र), जातक आदि।

जैन ग्रंथ : कल्पसूत्र, भगवती सूत्र, आचारांग सूत्र आदि।

ऐतिहासिक साहित्य स्रोत

राजतरंगिणी (कल्हण), पृथ्वीराज रासो (चन्द्रबरदाई), हर्षचरित (बाणभट्ट), मुद्राराक्षस (विशखादत्त), अर्थशास्त्र (कौटिल्य), अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास), स्वप्नवासवदत्ता (भास)।

राजाओं द्वारा रचित साहित्य

हाल (सातवाहन) : गाथा सप्तशती
महेन्द्रवर्मन (पल्लव) : मत्तविलास प्रहसन
हर्षवर्धन : रत्नावली, नागानन्द प्रियदर्शिका
सोमेश्वर (चालुक्य) : मान्सोल्लास

साहित्यिक स्रोत ग्रंथ : प्रमुख तथ्य

- राजतरंगिणी जो संस्कृत भाषा में है, पहली बार ऐतिहासिकता की झलक इसी ग्रंथ में मिलती है।
- महावंश व दीपवंश बौद्धग्रंथ, दक्षिणी बौद्ध मत के ग्रंथ हैं।
- ललित विस्तार (बौद्धग्रंथ) की रचना नेपाल में हुई थी।
- पाणिनी ने पहले संस्कृत व्याकरण अष्टाध्यायी की रचना की थी। इसमें मौर्यकाल के सामाजिक जीवन का वृत्तान्त मिलता है।
- पतंजलि ने महाभाष्य की रचना की, जो कि पाणिनी की अष्टाध्यायी पर आधारित है।
- ऐतिहासिक महत्व के प्रथम ग्रंथ की रचना हर्ष के दरबारी कवि बाणभट्ट ने हर्षचरित के रूप में की।
- अर्थशास्त्र जो कौटिल्य (चाणक्य/विष्णुगुप्त) ने लिखी, मौर्यकालीन राजव्यवस्था का चित्रण करती है।

विदेशियों द्वारा विवरण

यूनानी लेखक

1. हेरोडोटस : हेरोडोटस को इतिहास का पिता कहा जाता है। इन्होंने हिस्टोरिका नामक पुस्तक की रचना की।
2. मेगास्थनीज : मेगास्थनीज, सैल्यूकस के राजदूत के रूप में चन्द्रमुक्त मौर्य के दरबार में रहा तथा इण्डिका की रचना की। यह मूल रूप में अप्राप्य है, लेकिन इसके उद्धरण अनेक प्रख्यात लेखकों की रचनाओं में आए हैं।
3. अज्ञात लेखक : एक अज्ञात यूनानी लेखक ने ईसवी सन् की पहली सदी में भारतीय बंदरगाहों, प्राकृतिक स्थिति व व्यापार पर प्रकाश अपनी रचना-पेरीप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' (लाल सागर का विवरण) में दिया है।
4. टोलेमी : टोलेमी की ज्योग्राफी (150 ई. के आस पास) प्राचीन भारतीय भूगोल एवं वाणिज्य की जानकारी देती है।

5. **स्ट्रैबो** : स्ट्रैबो ने मेगास्थनीज के विवरण को काल्पनिक माना है।

रोमन लेखक

1. **प्लिनी** : प्लिनी की नेचुरलिस हिस्टोरिका भारत और इटली के बीच होने वाले व्यापारिक संबंधों की जानकारी देती है।

चीनी विवरण

- चीनी पर्यटक, भारत में बौद्ध धर्म के अध्ययन तथा बौद्ध तीर्थों का दर्शन करने आते थे।
- 1. **फाह्यान** : यह चन्द्रगुप्त द्वितीय (गुप्तशासक) के शासन काल में भारत आया (पाँचवीं सदी के प्रारंभ में)। उसने **फू-को-की (fu-ko-ki)** की रचना की जिसमें गुप्त काल में भारत के सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक स्थिति पर प्रकाश डाला।
- 2. **ह्वेन सांग (युवान च्वांग)** : यह हर्षवर्धन के समय 629 ई० में भारत आया और सी-यू-की (si-yu-ki) की रचना की। वाटर्स के अनुसार वह भारत को **इन-टु (अर्द्धचन्द्राकार)** नाम देता है। ह्वेन सांग के मित्र **व्ही-ली** ने ह्वेन सांग की जीवनी लिखी थी। इसने हर्षकालीन राजनीति के साथ-साथ धर्म, रीति-रिवाज एवं समाज का वर्णन किया है। इसमें 138 देशों का विवरण मिलता है।
- 3. **इत्सिंग** : यह सातवीं शताब्दी में भारत आया तथा नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालयों का वर्णन किया।

अरबी लेखक

1. **सुलेमान** : वह 9वीं शताब्दी में भारत आया तथा पाल एवं प्रतिहार शासकों के बारे में लिखा।
2. **अलबरूनी** : अलबरूनी (महमूद गजनवी का समकालीन) ने **तहकीक-ए-हिन्द (किताब-उल-हिन्द)** की रचना की, जिसमें भारत के निवासियों की दशा का वर्णन किया है।

पुरातात्विक स्रोत

- पुरातात्विक स्रोतों में अभिलेख, सिक्के (मुहर), स्मारक, मूर्तियाँ, चित्रकला, भौतिक अवशेष, मृदभाण्ड, आभूषण आदि आते हैं।

शब्दावली

अभिलेख

जो लेख मुहर, प्रस्तरस्तंभो स्तूपों, चट्टानों और ताम्रपत्रों पर मिलते हैं उन्हें अभिलेख कहते हैं।

एपिग्राफी

अभिलेख के अध्ययन को पुरालेखशास्त्र (एपिग्राफी) कहते हैं।

पेलिऑग्राफी

अभिलेख तथा दूसरे प्राचीन दस्तावेजों की प्राचीन तिथि के अध्ययन को पुरालिपिशास्त्र (पेलिऑग्राफी) कहते हैं।

न्यूमिस्मेटिक्स सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्मेटिक्स) कहते हैं।

1. सिक्के :

- भारत के प्राचीन सिक्के **पंचमार्क (punchmark)** या आहत सिक्के कहलाते थे। साहित्य में इन सिक्कों को **कार्षापण** कहा गया है।
- पुराने सिक्के तांबे, चांदी, सोने और सीसे के बनते थे।
- आरंभिक सिक्कों में कुछ प्रतीक मिलते थे, पर बाद में सिक्कों पर राजाओं और देवताओं के नाम तथा तिथियाँ उल्लिखित मिलती थी।
- सोने के लिखित सिक्के सर्वप्रथम **कुषाण राजाओं** ने जारी किए थे।
- गुप्त शासकों ने सबसे अधिक सोने के सिक्के जारी किए।
- **समुद्रगुप्त** को एक सिक्के पर **वीणा** बजाते हुए दिखाया गया है।
- सातवाहनों ने **सीसे (Lead)** के सिक्के जारी किए।
- गुप्त काल में स्वर्ण सिक्कों को 'दीनार' एवं चांदी के सिक्कों को **रूपक** कहते थे।

2. अभिलेख

- अभिलेख मुहरों, प्रस्तरस्तंभों, चट्टानों और ताम्रपत्रों पर मिलते हैं, तथा मंदिर की दीवारों और ईंटों या मूर्तियों पर भी मिलते हैं।
- सबसे अधिक अभिलेख **मैसूर संग्रहालय** में संगृहीत हैं।
- मौर्य, मौर्योत्तर और गुप्त काल के अधिकांश अभिलेख **कार्पस इन्सक्रिप्शनम इंडिकेरम्** नामक ग्रंथ में संकलित हैं।

अभिलेखों में प्रयुक्त लिपियाँ

1. **प्राकृत लिपि** : आरंभिक अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं।
2. **ब्राह्मी लिपि** : अशोक के शिलालेख ब्राह्मी लिपि में हैं। यह लिपि बाएँ से दाएँ लिखी जाती थी।
3. **खरोष्ठी लिपि** : अशोक के कुछ शिलालेख खरोष्ठी लिपि में हैं जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।

4. यूनानी एवं आरामाईक लिपि : पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान में अशोक के शिलालेखों में इन लिपियों का प्रयोग हुआ है।

चौदहवीं सदी में फिरोजशाह तुगलक को अशोक के दो शिलालेख; मेरठ (उ० प्र०) एवं टोपरा (हरियाणा) में मिले, जिन्हें दिल्ली लाया गया। 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने इन शिलालेखों की ब्राह्मी लिपि को सर्वप्रथम पढ़ा।

महत्वपूर्ण अभिलेख एवं उनके शासक

शासक	अभिलेख
1. समुद्रगुप्त (गुप्तवंश)	प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद), एरण अभिलेख (सागर, मध्यप्रदेश)
2. रुद्रदामन (शकु)	जूनागढ़ अभिलेख (गुजरात)
3. स्कंदगुप्त (गुप्तवंश)	भितरी स्तंभ लेख (गाजीपुर)
4. खारवेल (कलिंग)	हाथीगुम्फा अभिलेख
5. पुलकेशिन-II (चालुक्य)	ऐहोल अभिलेख
6. राजा भोज (प्रतिहार)	गवालियर प्रशस्ति (मध्य प्रदेश)
7. विजयसेन	देवपाड़ा अभिलेख
8. हर्षवर्धन (वर्द्धन वंश)	मधुवन एवं बासखेड़ा अभिलेख
9. यशोधर्मन (मालवा नरेश)	मंदसौर प्रशस्ति
10. गौतमीबलश्री (सातवाहन)	नासिक अभिलेख

अभिलेख : विशिष्ट तथ्य

- रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख संस्कृत भाषा में जारी प्रथम अभिलेख माना जाता है।
- पुलकेशिन-II का ऐहोल अभिलेख उसके दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा रचित है।
- अशोक के प्रयाग स्तम्भलेख में कारुवाकी एवं तीवर का उल्लेख मिलता है।
- समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति की रचना उसके संधि-विग्रहक हरिषेण ने की थी।
- भानुगुप्त के एरण अभिलेख में सर्वप्रथम सती प्रथा (गोपराज नामक सैनिक की पत्नी) का लिखित साक्ष्य प्राप्त होता है।

- चन्द्रगुप्त द्वितीय के उदयगिरि गुहा लेख के अनुसार उसका उद्देश्य संपूर्ण पृथ्वी को जीतना था।
- तुमुन अभिलेख में कुमारगुप्त -I को शरदकालीन सूर्य की तरह बताया गया है।
- स्कन्दगुप्त के भितरी अभिलेख में हूणों के आक्रमण का उल्लेख मिलता है।
- मंदसौर अभिलेख में यशोधर्मन को जननेंद्र कहा गया है।
- चन्द्रगुप्त-II के विजयों का वर्णन मेहरौली लौहस्तंभ लेख में मिलता है।

विदेशी अभिलेख

- बोगाज-कोई (एशिया माइनर, मध्य एशिया) से 1400 ई० पू० में प्राप्त संधि पत्र अभिलेख में वैदिक देवता मित्र, वरुण, इन्द्र और नाशत्य के नाम उल्लिखित हैं।
- हेलियोडोरस (यूनानी राजदूत) का बेसनगर (विदिशा) का गरुड़ स्तंभ लेख, भागवत धर्म (वासुदेव की आराधना) की जानकारी देता है।

प्राचीन भारतीय इतिहास के आधुनिक लेखक:

- 1776 में मनुस्मृति का अंग्रेजी अनुवाद ए कोड ऑफ जेन्टल लॉज के नाम से कराया गया।
- सर विलियम जोन्स (एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल के संस्थापक) ने 1789 में अभिज्ञानशाकुंतलम् का अंग्रेजी में अनुवाद किया।
- विल्किन्स ने 1785 में भगवद्गीता का अंग्रेजी में अनुवाद किया।
- विन्सेंट आर्थर स्मिथ की पुस्तक अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया में प्राचीन भारत का सुव्यवस्थित इतिहास प्रस्तुत किया गया है।
- ब्रिटिश इतिहासकार ए. एल. बैशम ने ग्रंडर दैट वाज इंडिया लिखी।
- डी. डी. कौसंबी की कृति एन इन्ट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ इंडियन हिस्ट्री, प्राचीन भारतीय इतिहास जानने का एक उत्तम स्रोत है।

महत्वपूर्ण रचनाएं व लेखक

लेखक	रचना
विज्ञानेश्वर	मिताक्षरा
जीमूतवाहन	दायभाग
कालिदास	अभिज्ञानशाकुंतलम्, माल्विकाग्निमित्रम्, रघुवंश